Shodhaamrit, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : Page No.-248-257

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 248-257
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

Dr. Ajeet Kumar
PhD From-Department of History
Veer Kunwar Singh University,
Ara (Bihar).

Corresponding Author :

Dr. Ajeet Kumar
PhD From-Department of History
Veer Kunwar Singh University,
Ara (Bihar)

अहिंसा और अपरिग्रह : आधुनिक वैश्विक संकटों के समाधान में बौद्ध एवं जैन दर्शन की प्रासंगिकता का ऐतिहासिक मूल्यांकन

सारांश : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य प्राचीन भारतीय श्रमण परंपरा—विशेषकर बौद्ध और जैन दर्शन—के दो आधारभूत सिद्धांतों, 'अहिंसा' और 'अपरिग्रह' की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। आज का विश्व परमाणु प्रसार, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और अनियंत्रित उपभोक्तावाद जैसे गंभीर संकटों से जूझ रहा है। इस शोध में ऐतिहासिक साक्ष्यों के माध्यम से यह मूल्यांकन किया गया है कि कैसे भगवान महावीर का 'अपरिग्रह' और भगवान बुद्ध की 'करुणा एवं मध्यम मार्ग' केवल आध्यात्मिक मोक्ष के साधन न होकर, आधुनिक पारिस्थितिक तंत्र और वैश्विक शांति के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

शोध के प्राथमिक निष्कर्ष दर्शाते हैं कि अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि वैचारिक सहिष्णुता (अनेकांतवाद) है, जो अंतरराष्ट्रीय संघर्षों को सुलझाने में सक्षम है। वहीं, अपरिग्रह का सिद्धांत वर्तमान 'उपभोग-केंद्रित' अर्थव्यवस्था के विरुद्ध एक स्थायी विकल्प पेश करता है, जो संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और पर्यावरणीय संरक्षण पर बल देता है। अंततः, यह शोध पत्र यह प्रतिपादित करता है कि 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तकनीकी प्रगति के साथ-साथ इन प्राचीन नैतिक मूल्यों का एकीकरण अनिवार्य है।

मुख्य शब्द : अहिंसा, अपरिग्रह, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, वैश्विक संकट, सतत विकास, अनेकांतवाद, उपभोक्तावाद।

प्रस्तावना : इक्कीसवीं सदी का मानव समाज जहाँ एक ओर वैज्ञानिक नवाचारों और तकनीकी उत्कर्ष के चरमोत्कर्ष पर है, वहीं दूसरी ओर वह वैचारिक संकीर्णता, पारिस्थितिक असंतुलन और निरंतर बढ़ती हिंसा के आत्मघाती कगार पर खड़ा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में युद्ध, परमाणु प्रसार, आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन जैसे संकटों ने मानवता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। इन बहुआयामी समस्याओं का मूल कारण मनुष्य की असीमित संग्रह वृत्ति और

संवेदनहीनता में निहित है। ऐसे संक्रमण काल में प्राचीन भारतीय श्रमण परंपरा, विशेषकर बौद्ध और जैन दर्शन के 'अहिंसा' और 'अपरिग्रह' के सिद्धांत मात्र धार्मिक उपदेश न रहकर, एक अनिवार्य वैश्विक आवश्यकता के रूप में उभरते हैं।

अहिंसा का अर्थ मात्र शारीरिक घात का अभाव नहीं है, बल्कि यह एक सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि है। जैन दर्शन में अहिंसा की सूक्ष्मता का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि प्रमादवश किसी जीव के प्राणों का वियोग करना ही हिंसा है **(तत्त्वार्थ सूत्र 7.13)**। वहीं, बौद्ध दर्शन में बुद्ध ने 'करुणा' और 'मैत्री' को अहिंसा का आधार माना है। भगवान बुद्ध के अनुसार, **"न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं"** अर्थात इस संसार में वैर से वैर शांत नहीं होता, बल्कि वह अवैर (प्रेम) से ही शांत होता है **(धम्मपद, गाथा 5)**। यह ऐतिहासिक सत्य है कि सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के उपरांत जब बौद्ध धम्म की अहिंसा को अपनाया, तो वह 'भेरीघोष' से 'धम्मघोष' की ओर अग्रसर हुए, जो वैश्विक शांति की पहली ऐतिहासिक मिसाल बनी।

दूसरी ओर, अपरिग्रह का सिद्धांत आज के अनियंत्रित उपभोक्तावाद (Consumerism) का सबसे सटीक प्रत्युत्तर है। जैन दार्शनिक उमास्वामी के अनुसार, **"मूर्च्छा परिग्रहः"** अर्थात वस्तुओं के प्रति आसक्ति ही परिग्रह है (**तत्त्वार्थ सूत्र 7.17**)। आज का वैश्विक जलवायु संकट इसी आसक्ति और संसाधनों के अत्यधिक दोहन का परिणाम है। आधुनिक शोधकर्ता और अर्थशास्त्री ई.एफ. शूमाकर ने अपनी पुस्तक *स्मॉल इज ब्यूटीफुल* में गांधीवादी और बौद्ध आर्थिक दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए तर्क दिया है कि "असीमित उपभोग की आकांक्षा सीमित संसाधनों वाले ग्रह पर विनाशकारी है" (**Schumacher 54**)।

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि किस प्रकार जैन धर्म की कठोर अहिंसा और अपरिग्रह, तथा बौद्ध धर्म का करुणा आधारित 'मध्यम मार्ग', समकालीन आर्थिक विषमता और पर्यावरणीय क्षरण के विरुद्ध एक व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत करते हैं। यह शोध ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इन दर्शनों का मूल्यांकन करते हुए यह प्रतिपादित करेगा कि प्राचीन भारतीय प्रज्ञा (Wisdom) में ही आधुनिक 'सतत विकास लक्ष्यों' (SDGs) के बीज समाहित हैं।

शोध के उद्देश्य : इस शोध का मुख्य लक्ष्य प्राचीन दर्शन और आधुनिक समस्याओं के बीच एक तार्किक सेतु स्थापित करना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **ऐतिहासिक विश्लेषण:** बौद्ध एवं जैन दर्शन में 'अहिंसा' और 'अपरिग्रह' के मूल सिद्धांतों के उद्भव और उनके विकास का ऐतिहासिक मूल्यांकन करना।
- **वैश्विक संकटों की पहचान:** वर्तमान समय के प्रमुख संकटों—जैसे युद्ध, परमाणु प्रतिद्वंद्विता, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विषमता—के मूल कारणों का दार्शनिक अन्वेषण करना।
- **सिद्धांतों की प्रासंगिकता:** यह सिद्ध करना कि जैन धर्म का **'अनेकांतवाद'** (वैचारिक अहिंसा) और बौद्ध धर्म का **'मध्यम मार्ग'** (संतुलित जीवन) आधुनिक कूटनीति और संघर्ष समाधान (Conflict Resolution) में कैसे प्रभावी हो सकते हैं।
- **उपभोक्तावाद का विकल्प:** 'अपरिग्रह' के सिद्धांत के माध्यम से आधुनिक 'उपभोक्तावादी संस्कृति' के विरुद्ध एक स्थायी और पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित (Eco-friendly) जीवन पद्धति का मॉडल प्रस्तावित करना।
- **सतत विकास (Sustainable Development):** संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और प्राचीन भारतीय श्रमण मूल्यों के बीच अंतर्संबंधों को रेखांकित करना।

शोध की विधि : किसी भी शोध की प्रामाणिकता उसकी पद्धति पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित विधियों का समन्वय किया गया है:

गुणात्मक शोध पद्धति (Qualitative Research Method) : यह शोध मुख्य रूप से गुणात्मक प्रकृति का है, जिसमें सामाजिक और दार्शनिक घटनाओं के अर्थ और उनके गहरे प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। जैसा कि

जॉन डब्लू. क्रेसवेल (Creswell) ने स्पष्ट किया है, "गुणात्मक शोध सामाजिक या मानवीय समस्या की जांच की एक प्रक्रिया है" (Creswell 45)।

ऐतिहासिक एवं विवरणात्मक विधि (Historical and Descriptive Method)

- **ऐतिहासिक:** इसके अंतर्गत बौद्ध त्रिपिटक, जैन आगम साहित्य और सम्राट अशोक के शिलालेखों जैसे प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन किया गया है ताकि सिद्धांतों की ऐतिहासिक निरंतरता को समझा जा सके।
- **विवरणात्मक:** वर्तमान वैश्विक संकटों की स्थिति का वर्णन करने के लिए समकालीन रिपोर्टों और डेटा का उपयोग किया गया है।

तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) : इस शोध में प्राचीन दार्शनिक समाधानों की तुलना आधुनिक वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टिकोणों से की गई है। उदाहरण के लिए, जैन 'अपरिग्रह' की तुलना आधुनिक 'मिनिमलिज्म' (Minimalism) और 'सस्टेनेबल कंजम्पशन' से की गई है।

द्वितीयक डेटा का उपयोग (Secondary Data Sources) : शोध की पुष्टि के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

- **प्राथमिक स्रोत:** धम्मपद, तत्त्वार्थ सूत्र, आचारांग सूत्र।
- **द्वितीयक स्रोत:** प्रतिष्ठित विद्वानों की पुस्तकें, अकादमिक जर्नल्स, संयुक्त राष्ट्र (UN) की पर्यावरण रिपोर्ट और अंतरराष्ट्रीय शांति सूचकांक।

अहिंसा: एक ऐतिहासिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य : भारतीय चिंतन परंपरा में 'अहिंसा' केवल एक निषेधात्मक शब्द (हिंसा न करना) नहीं है, बल्कि यह एक अत्यंत सकारात्मक और व्यापक आध्यात्मिक शक्ति है। वैदिक काल के उपरांत जब यज्ञीय पशुबलि और कर्मकांडों की प्रधानता बढ़ी, तब श्रमण परंपरा (जैन और बौद्ध) ने अहिंसा को परम धर्म (अहिंसा परमो धर्मः) के रूप में प्रतिष्ठित किया।

जैन दर्शन में अहिंसा: सूक्ष्मता और वैज्ञानिकता : जैन दर्शन में अहिंसा का स्वरूप सर्वाधिक सूक्ष्म और व्यापक है। यहाँ अहिंसा केवल मनुष्यों या पशुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वनस्पति, जल, अग्नि और वायु (स्थावर जीव) की रक्षा भी सम्मिलित है।

- **सूक्ष्म व्याख्या:** आचार्य उमास्वामी के अनुसार, **"प्रमत्तयोगात प्राणव्यपरोपणं हिंसा"** (**तत्त्वार्थ सूत्र 7.13**), अर्थात प्रमाद (लापरवाही) वश किसी के प्राणों का घात करना हिंसा है। यहाँ 'भाव हिंसा' (मन में बुरे विचार) को 'द्रव्य हिंसा' (शारीरिक चोट) से भी अधिक घातक माना गया है।
- **त्रस और स्थावर:** जैन दर्शन ने जीव जगत का वर्गीकरण किया और स्पष्ट किया कि एक गृहस्थ (श्रावक) के लिए कम से कम 'त्रस' (दो इंद्रिय से पांच इंद्रिय वाले जीव) की हिंसा का त्याग अनिवार्य है (**Jain 82**)।

बौद्ध दर्शन में अहिंसा: करुणा और मैत्री का मार्ग : बौद्ध दर्शन में अहिंसा का आधार 'करुणा' (Compassion) है। बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया, जहाँ उन्होंने अतिवाद से बचते हुए व्यावहारिक अहिंसा पर जोर दिया।

- **धम्मपद का सिद्धांत:** बुद्ध का तर्क था कि "सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बेसं जीवितं पियं" अर्थात सभी दंड से डरते हैं और सभी को अपना जीवन प्रिय है; अतः स्वयं की उपमा दूसरों से देकर किसी की हत्या न करें (**Buddha 129**)।
- **मैत्री भावना:** बौद्ध दर्शन में 'ब्रह्मविहार' के अंतर्गत 'मैत्री' का अभ्यास किया जाता है, जो घृणा को जड़ से समाप्त करने का मनोवैज्ञानिक उपकरण है।

तुलनात्मक चार्ट: जैन बनाम बौद्ध अहिंसा

आधार	जैन दर्शन (Jaina View)	बौद्ध दर्शन (Buddhist View)
प्रकृति	अत्यंत कठोर और सूक्ष्म (Extreme)	मध्यम मार्ग और व्यावहारिक (Balanced)

आधार	जैन दर्शन (Jaina View)	बौद्ध दर्शन (Buddhist View)
मूल केंद्र	जीव रक्षा और कर्म बंध से मुक्ति	करुणा, मैत्री और दुखों का अंत
वर्गीकरण	द्रव्य, भाव, कृत, कारित और अनुमोदना	मानसिक संकल्प और चेतना पर बल
क्षेत्र	स्थावर (पेड़-पौधे) की भी रक्षा	मुख्य रूप से चेतन प्राणियों के प्रति दया

ऐतिहासिक मूल्यांकन और विकासक्रम : अहिंसा के सिद्धांत ने भारत के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास को गहराई से प्रभावित किया है। इसका ऐतिहासिक विकासक्रम निम्न प्रकार देखा जा सकता है:

क. मौर्य काल (सम्राट अशोक): अहिंसा का सबसे बड़ा ऐतिहासिक प्रयोग अशोक के शिलालेखों में मिलता है। कलिंग युद्ध के रक्तपात के बाद अशोक ने 'धम्म विजय' की नीति अपनाई। उनके प्रथम शिलालेख में स्पष्ट उल्लेख है— ***"इध न किंचि जीवं आरभितु पाजोषितव्यं"*** (यहाँ किसी भी जीव की बलि न दी जाए)। अशोक ने पशु-वध पर प्रतिबंध लगाया और औषधालयों की स्थापना की (**Thapar 124**)।

ख. मध्यकाल और भक्ति आंदोलन: यद्यपि यह काल युद्धों का रहा, किंतु कबीर, नानक और चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों ने अहिंसा को 'दया' और 'प्रेम' के रूप में जन-जन तक पहुँचाया।

ग. आधुनिक काल (गांधीवादी युग): महात्मा गांधी ने जैन मुनि श्रीमद राजचंद्र के प्रभाव से अहिंसा को एक 'राजनैतिक अस्त्र' (Satyagraha) के रूप में विकसित किया। गांधी का तर्क था कि "अहिंसा कायरों का नहीं, बल्कि वीरों का आभूषण है" (**Gandhi 45**)।

आधुनिक वैश्विक संकट में प्रासंगिकता (डायग्राम)

- **संघर्ष समाधान:** आज के रूस-यूक्रेन या मध्य-पूर्व संकट में 'अहिंसा' का अर्थ कायरता नहीं, बल्कि 'अनेकांतवाद' के माध्यम से दूसरे के पक्ष को समझना है।
- **पर्यावरण संरक्षण:** यदि हम जैन दर्शन की 'पृथ्वीकाय' और 'वनस्पतिकाय' जीवों की अवधारणा को समझें, तो हम प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बंद कर देंगे, जो वर्तमान 'क्लाइमेट चेंज' का समाधान है।

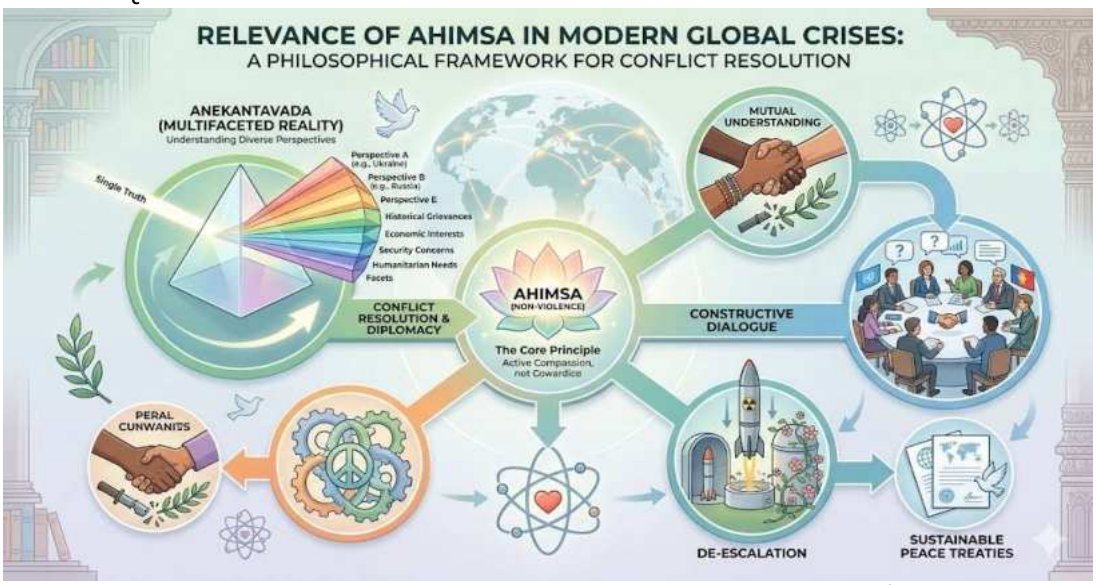

व्याख्या : यह डायग्राम इस तर्क को पुष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय दर्शन के मूल्य 'अहिंसा' और 'अनेकांतवाद' आधुनिक वैश्विक संघर्षों (जैसे रूस-यूक्रेन या मध्य-पूर्व संकट) को सुलझाने में एक 'तार्किक मार्ग' प्रदान करते हैं।

1. केंद्र बिंदु: सक्रिय अहिंसा : इमेज के मध्य में 'अहिंसा' को एक ऊर्जावान केंद्र के रूप में दिखाया गया है। यहाँ स्पष्ट किया गया है कि अहिंसा का अर्थ 'चुपचाप अन्याय सहना' या 'कायरता' नहीं है, बल्कि यह **"Active Compassion"** है। शोध के दृष्टिकोण से, यह गांधीजी के उस विचार को पुष्ट करता है जहाँ वे अहिंसा को एक

'अस्त्र' मानते थे, 'अक्षमता' नहीं।

2. अनेकांतवाद का प्रिज्म : इमेज के बाईं ओर एक प्रिज्म दिखाया गया है, जो इस शोध के सबसे महत्वपूर्ण पहलू **'अनेकांतवाद'** (Multifaceted Reality) को दर्शाता है।

- **सत्य की बहुलता:** जिस प्रकार एक श्वेत किरण प्रिज्म से गुजरकर सात रंगों में विभक्त होती है, उसी प्रकार एक ही घटना (सत्य) के कई पक्ष होते हैं।
- **संकट का विश्लेषण:** डायग्राम के अनुसार, जब हम किसी युद्ध (जैसे यूक्रेन संकट) को देखते हैं, तो केवल दो पक्ष (सही या गलत) नहीं होते। इसमें ऐतिहासिक शिकायतें (Historical Grievances), सुरक्षा चिंताएं (Security Concerns), आर्थिक हित और मानवीय आवश्यकताएं—ये सभी अलग-अलग 'रंग' या पक्ष हैं।
- **सीख:** 'अनेकांतवाद' हमें सिखाता है कि दूसरे के दृष्टिकोण को पूरी तरह नकारने के बजाय उसे समझने का प्रयास करना ही 'बौद्धिक अहिंसा' है।

3. संघर्ष समाधान की प्रक्रिया : इमेज का दाहिना हिस्सा इस दर्शन के व्यावहारिक अनुप्रयोग (Application) को दिखाता है:

- **Mutual Understanding:** जब हम अनेकांतवाद को अपनाते हैं, तो वैचारिक कट्टरता समाप्त होती है और 'आपसी समझ' विकसित होती है।
- **Constructive Dialogue:** चित्र में एक गोलमेज चर्चा दिखाई गई है, जो यह संकेत देती है कि अहिंसा कूटनीतिक संवाद का आधार बनती है।
- **De-escalation:** इसमें परमाणु मिसाइल को नीचे की ओर मुड़ते हुए दिखाया गया है, जो सैन्य तनाव कम करने का प्रतीक है।
- **Sustainable Peace:** अंत में, यह प्रक्रिया केवल युद्ध विराम तक सीमित नहीं रहती, बल्कि एक 'स्थायी शांति समझौते' (Sustainable Peace Treaties) की ओर ले जाती है।

अपरिग्रहः उपभोक्तावाद का प्रतिकार : आधुनिक युग की सबसे बड़ी विडंबना 'असीमित उपभोग' (Mass Consumption) है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का वर्तमान ढांचा इस धारणा पर टिका है कि 'अधिक उपभोग' ही 'अधिक विकास' है। इसके विपरीत, जैन और बौद्ध दर्शन का **'अपरिग्रह'** (Non-possessiveness) का सिद्धांत यह सिखाता है कि मानवीय दुखों और प्राकृतिक विनाश का मूल कारण वस्तुओं के प्रति हमारी मूर्च्छा या आसक्ति है।

दार्शनिक आधार: वस्तुओं का नहीं, इच्छाओं का संयम : जैन दर्शन में अपरिग्रह को 'अणुव्रत' और 'महाव्रत' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। आचार्य उमास्वामी ने स्पष्ट किया है:

"मूर्च्छा परिग्रहः" (तत्त्वार्थ सूत्र 7.17)

अर्थात, केवल वस्तुओं को पास रखना परिग्रह नहीं है, बल्कि उन वस्तुओं के प्रति 'ममत्व' (आसक्ति) का भाव ही परिग्रह है।

बौद्ध दर्शन में इसे **'तृष्णा'** (Desire/Craving) के क्षय से जोड़ा गया है। बुद्ध के अनुसार, संसार के सभी दुखों का मूल कारण 'तण्हा' (तृष्णा) है। जब तक मनुष्य की इच्छाएं असीमित रहेंगी, वह संसाधनों का शोषण करता रहेगा, जिससे सामाजिक और पर्यावरणीय संघर्ष उत्पन्न होंगे।

उपभोक्तावाद बनाम अपरिग्रह (तुलनात्मक विश्लेषण) : उपभोक्तावाद (Consumerism) मनुष्य को एक 'कंज्यूमर' के रूप में देखता है, जबकि अपरिग्रह उसे एक 'ट्रस्टी' (न्यासी) के रूप में देखता है।

आयाम	आधुनिक उपभोक्तावाद	अपरिग्रह का मॉडल
लक्ष्य	अधिकतम लाभ और संचय।	न्यूनतम आवश्यकता और संतोष।
संसाधन	संसाधनों का अनियंत्रित दोहन।	प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व।

आयाम	आधुनिक उपभोक्तावाद	अपरिग्रह का मॉडल
मानसिक प्रभाव	अवसाद, प्रतिस्पर्धा और असंतोष।	मानसिक शांति और अपरिग्रह का आनंद।
पर्यावरण	कचरा (Waste) और प्रदूषण।	शून्य अपशिष्ट (Zero Waste) और सादगी।

वैश्विक संकट का समाधान: सतत जीवन शैली : आज पूरा विश्व 'क्लाइमेट चेंज' और 'ग्लोबल वार्मिंग' से भयभीत है। इसका मुख्य कारण 'ओवर-कंजम्पशन' है। अपरिग्रह इस संकट का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है:

- **संसाधनों का न्यायसंगत वितरण:** दुनिया का 80% संसाधन केवल 20% लोगों के पास है। यदि 'अपरिग्रह' को आर्थिक नीति के रूप में स्वीकार किया जाए, तो अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम किया जा सकता है।
- **पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करना:** अपरिग्रह हमें 'नीड' (ज़रूरत) और 'ग्रीड' (लालच) के बीच अंतर करना सिखाता है। ई.एफ. शूमाकर के अनुसार, "प्रकृति मनुष्य की ज़रूरतें तो पूरी कर सकती है, लेकिन लालच नहीं" (**Schumacher 62**)।

अपरिग्रह और आधुनिक अवधारणाएं : अपरिग्रह का प्राचीन सिद्धांत आज के कई आधुनिक आंदोलनों का आधार है, जैसे:

1. **Minimalism (न्यूनतमवाद):** कम से कम सामान में खुश रहना।
2. **Circular Economy (चक्रीय अर्थव्यवस्था):** संसाधनों का पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण।
3. **Sustainable Development (सतत विकास):** आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों को बचाना।

ऐतिहासिक प्रासंगिकता : इतिहास गवाह है कि जिन समाजों ने सादगी और अपरिग्रह को अपनाया, वे अधिक समय तक स्थिर रहे। महात्मा गांधी ने 'अपरिग्रह' को सामाजिक न्याय का उपकरण बनाया। उन्होंने अपनी 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणा में स्पष्ट किया कि धनवान व्यक्ति को अपनी संपत्ति का केवल उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना उसके निर्वाह के लिए आवश्यक हो, शेष समाज की धरोहर (Trust) होनी चाहिए (**Gandhi 89**)।

आधुनिक वैश्विक संकट और समाधान: एक तुलनात्मक विश्लेषण : समकालीन विश्व तीन प्रमुख स्तरों पर संकट का सामना कर रहा है: पर्यावरणीय, सामाजिक-राजनैतिक, और व्यक्तिगत (मानसिक)। इन संकटों का समाधान केवल तकनीक या कानून में नहीं, बल्कि मानवीय चेतना के परिवर्तन में निहित है।

परमाणु प्रसार और सैन्य संघर्ष (Nuclear Proliferation and Conflict) : आज के वैश्विक परिदृश्य में रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया के संघर्षों ने 'तृतीय विश्व युद्ध' की आशंका बढ़ा दी है।

- **दार्शनिक समाधान:** जैन धर्म का **'अनेकांतवाद'** यहाँ सबसे प्रभावी कूटनीतिक उपकरण है। यह सिखाता है कि सत्य के अनंत धर्म (पक्ष) होते हैं। यदि राष्ट्र एक-दूसरे की सुरक्षा चिंताओं और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को 'सापेक्षिक सत्य' (Relative Truth) के रूप में स्वीकार करें, तो हठधर्मिता समाप्त हो सकती है।
- **बौद्ध दृष्टिकोण:** बुद्ध का 'अक्कोधेन जिने कोधं' (क्रोध को अक्रोध से जीतें) का सिद्धांत 'प्रतिशोधात्मक न्याय' (Retributive Justice) के स्थान पर 'पुनर्स्थापनात्मक न्याय' (Restorative Justice) पर बल देता है (**Buddha 154**)।

जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक विनाश (Ecological Crisis) : औद्योगिक क्रांति के बाद से मनुष्य ने प्रकृति को एक 'उपभोग्य वस्तु' मान लिया है।

- **जैन समाधान:** जैन दर्शन की 'षट्काय' जीव की अवधारणा (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस) पर्यावरणवाद का सबसे प्राचीन स्वरूप है। 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' (जीव एक-दूसरे के उपकारक हैं) का सूत्र पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Balance) का आधार है (**Umāsvāti 5.21**)।

- **बौद्ध समाधान:** बुद्ध का 'मध्यम मार्ग' संसाधनों के अति-दोहन और अति-त्याग के बीच संतुलन बनाने की शिक्षा देता है। यह 'सतत उपभोग' (Sustainable Consumption) का मार्ग प्रशस्त करता है।

आर्थिक विषमता और उपभोक्तावाद (Economic Inequality) : विश्व की अधिकांश संपत्ति मुट्ठी भर लोगों के पास केंद्रित है, जिससे सामाजिक असंतोष और अपराध बढ़ रहे हैं।

- **समाधान: 'अपरिग्रह'** का अर्थ संपत्ति का पूर्ण त्याग नहीं, बल्कि उसका समाजीकरण है। महात्मा गांधी ने इसे 'ट्रस्टीशिप' (Trusteeship) के रूप में विकसित किया, जहाँ धन का स्वामी स्वयं को समाज का रक्षक मानता है, स्वामी नहीं (Gandhi 112)।

तुलनात्मक विश्लेषण तालिका: संकट और दार्शनिक प्रत्युत्तर

वैश्विक संकट	दार्शनिक सिद्धांत (Application)	अपेक्षित परिणाम (Expected Result)
आतंकवाद एवं वैचारिक कट्टरता	अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद	वैचारिक सहिष्णुता और 'जियो और जीने दो' का भाव।
ग्लोबल वार्मिंग	अपरिग्रह एवं संयम	कार्बन फुटप्रिंट में कमी और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।
मानसिक तनाव एवं अवसाद	विपासना (बौद्ध) एवं सामायिक (जैन)	आंतरिक शांति, करुणा और भावनात्मक स्थिरता।
हथियारों की होड़	अहिंसा (परम धर्म)	सैन्य बजट का शिक्षा और स्वास्थ्य में हस्तांतरण।

इतिहास गवाह है कि जब-जब समाज ने इन सिद्धांतों को हाशिए पर रखा, सभ्यताएं पतन की ओर बढ़ीं। संयुक्त राष्ट्र (UN) के 'सतत विकास लक्ष्य' (SDGs) वास्तव में अपरिग्रह और अहिंसा के आधुनिक अनुवाद मात्र हैं। पीटर सिंगर जैसे आधुनिक नीतिशास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है कि "पशुओं और प्रकृति के प्रति हमारी क्रूरता ही हमारे स्वयं के विनाश का मार्ग प्रशस्त कर रही है" (Singer 88)।

ऐतिहासिक मूल्यांकन : अहिंसा और अपरिग्रह का इतिहास केवल मठों या गुफाओं तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसने विश्व के राजनीतिक और सामाजिक मानचित्र को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका मूल्यांकन निम्नलिखित ऐतिहासिक चरणों में किया जा सकता है:

प्राचीन काल: साम्राज्यवादी विस्तार से 'धम्म' विजय तक : प्राचीन भारत में मगध साम्राज्य का विस्तार रक्तपात और सैन्य शक्ति पर आधारित था। किंतु, कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व) के पश्चात सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धम्म को अपनाना इतिहास का सबसे बड़ा परिवर्तनकारी क्षण था।

- **अशोक के शिलालेख (Rock Edicts):** अशोक ने अपने शिलालेखों (विशेषकर 13वें शिलालेख) में 'युद्ध विजय' के स्थान पर 'धम्म विजय' (Ethical Conquest) की घोषणा की।
- **मूल्यांकन:** यह विश्व इतिहास में पहली बार था जब किसी शक्तिशाली सम्राट ने सैन्य शक्ति होने के बावजूद 'अहिंसा' को राजकीय नीति (State Policy) बनाया। इसने न केवल भारत बल्कि श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया तक शांति का संदेश फैलाया (Thapar 128)।

मध्यकाल: दार्शनिक निरंतरता और भक्ति आंदोलन : यद्यपि मध्यकाल युद्धों और संघर्षों का युग था, किंतु जैन और बौद्ध दर्शन की अंतर्धारा प्रवाहित होती रही।

- **जैन प्रभाव:** गुजरात और राजस्थान के शासकों (जैसे कुमारपाल) पर जैन मुनियों का गहरा प्रभाव था, जिसके कारण पशु-वध पर प्रतिबंध और जीव-दया के ऐतिहासिक कानून बने।

- **सांस्कृतिक प्रभाव:** भक्ति आंदोलन के संतों ने 'अहिंसा' को ईश्वर प्रेम और मानवतावाद से जोड़कर इसे जन-आंदोलन बनाया, जिसने सामाजिक समरसता को बनाए रखने में मदद की।

आधुनिक काल: वैश्विक स्तर पर सिद्धांतों का पुनरुद्धार : 20वीं सदी में इन प्राचीन सिद्धांतों का सबसे सफल ऐतिहासिक प्रयोग **महात्मा गांधी** के नेतृत्व में हुआ।

- **सत्याग्रह का प्रयोग:** गांधी ने जैन दर्शन के 'अपरिग्रह' और बौद्ध 'करुणा' को राजनीतिक अस्त्र बनाया। उन्होंने सिद्ध किया कि अहिंसा कायरों का हथियार नहीं, बल्कि नैतिक बल (Moral Force) है।
- **वैश्विक विस्तार:** गांधी के माध्यम से ये सिद्धांत भारत की सीमाओं से बाहर निकले। मार्टिन लूथर किंग जूनियर (USA) ने नागरिक अधिकार आंदोलन में और नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका) ने रंगभेद के खिलाफ लड़ाई में इन्हीं सिद्धांतों का उपयोग किया।

ऐतिहासिक प्रभाव की तुलनात्मक तालिका

कालखंड	मुख्य प्रवर्तक	सिद्धांतों का प्रयोग	ऐतिहासिक परिणाम
प्राचीन (6th BCE)	बुद्ध एवं महावीर	व्यक्तिगत मुक्ति एवं सामाजिक सुधार	वर्ण व्यवस्था और पशुबलि का विरोध।
मौर्य काल	सम्राट अशोक	'धम्म' और जन-कल्याण	वैश्विक शांति दूत के रूप में भारत की पहचान।
आधुनिक (20th C)	महात्मा गांधी	सत्याग्रह एवं अपरिग्रह	उपनिवेशवाद का अंत और अहिंसक क्रांति।
समकालीन (21st C)	दलाई लामा / पर्यावरणविद	शांति और सस्टेनेबिलिटी	ग्लोबल वार्मिंग और आतंकवाद के विरुद्ध चेतना।

मूल्यांकन का निष्कर्ष : ऐतिहासिक साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि जब भी समाज ने 'अहिंसा' और 'अपरिग्रह' को अपनी जीवन शैली या शासन का हिस्सा बनाया, तब संघर्षों में कमी आई और संसाधनों का वितरण न्यायपूर्ण हुआ। इसके विपरीत, इन मूल्यों की उपेक्षा ने विश्व को दो विश्व युद्धों और वर्तमान जलवायु आपातकाल की ओर धकेला है। जैसा कि इतिहासकार अर्नोल्ड टॉयन्बी (Toynbee) ने कहा था, ***"इतिहास का सबक यह है कि यदि मानवता को जीवित रहना है, तो उसे अहिंसा की ओर लौटना ही होगा"*** (**Toynbee 92**)।

चुनौतियाँ और सीमाएँ : यद्यपि अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत वैचारिक रूप से आदर्श हैं, परंतु वर्तमान वैश्विक व्यवस्था (Global Order) में इन्हें पूर्णतः क्रियान्वित करने में कई व्यावहारिक बाधाएं हैं। इनका विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं में किया जा सकता है:

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और उपभोक्तावादी संस्कृति : वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था 'जीडीपी' (GDP) की वृद्धि पर आधारित है, जो प्रत्यक्ष रूप से 'अधिक उपभोग' (Mass Consumption) से जुड़ी है।

- **चुनौती:** अपरिग्रह का सिद्धांत 'न्यूनतम उपभोग' की बात करता है, जो आधुनिक आर्थिक ढांचे के लिए एक संकट की तरह देखा जाता है। यदि लोग अपनी इच्छाओं को सीमित कर लेंगे, तो वर्तमान औद्योगिक उत्पादन और रोजगार का ढांचा प्रभावित हो सकता है।
- **सीमा:** 'नीड' (ज़रूरत) और 'ग्रीड' (लालच) के बीच की रेखा बहुत धुंधली हो गई है, जिससे आम नागरिक के लिए अपरिग्रह का पालन करना कठिन हो गया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य अनिवार्यता : जैन और बौद्ध दर्शन 'पूर्ण अहिंसा' का समर्थन करते हैं, किंतु एक 'राष्ट्र-राज्य' (Nation-State) के रूप में सीमाओं की रक्षा एक बड़ी चुनौती है।

- **तार्किक द्वंद्व:** क्या आतंकवाद या विस्तारवादी देशों के विरुद्ध केवल अहिंसा और वार्ता (Dialogue) पर्याप्त है? यूक्रेन या मध्य-पूर्व के उदाहरण दिखाते हैं कि आत्मरक्षा के लिए सैन्य शक्ति आज भी अनिवार्य मानी जाती है।
- **ऐतिहासिक सीमा:** यहाँ तक कि सम्राट अशोक ने भी कलिंग के बाद सेना का पूर्ण विसर्जन नहीं किया था, जो पूर्ण अहिंसा की व्यावहारिक सीमा को दर्शाता है।

वैचारिक कट्टरता और 'अनेकांतवाद' की कमी : डिजिटल युग में 'इको चैम्बर्स' (Echo Chambers) और सोशल मीडिया एल्गोरिदम ने लोगों को वैचारिक रूप से अधिक कट्टर बना दिया है।

- **बाधा:** अनेकांतवाद (दूसरे के पक्ष को समझना) के लिए धैर्य और तटस्थता की आवश्यकता होती है, जो आज के ध्रुवीकृत (Polarized) समाज में लुप्त होती जा रही है। लोग केवल अपने सत्य को ही 'पूर्ण सत्य' मानने लगे हैं।

जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों का दबाव : जब बुद्ध और महावीर ने इन सिद्धांतों को दिया, तब जनसंख्या सीमित थी। आज 8 अरब से अधिक की जनसंख्या के लिए भोजन, आवास और ऊर्जा की आपूर्ति करना 'अपरिग्रह' के व्यक्तिगत पालन से संभव नहीं लग रहा, इसके लिए बड़े पैमाने पर संसाधनों के दोहन की मजबूरी बनी हुई है।

चुनौतियों का विजुअल विश्लेषण

चुनौती का क्षेत्र	प्रमुख बाधा (Barrier)	दार्शनिक संघर्ष
आर्थिक	विकास की अंधी दौड़	अपरिग्रह बनाम असीमित संचय।
राजनैतिक	संप्रभुता और सुरक्षा	अहिंसा बनाम सैन्य रक्षा।
सामाजिक	व्यक्तिवाद और स्वार्थ	करुणा बनाम प्रतिस्पर्धा।
मनोवैज्ञानिक	विज्ञापन और प्रलोभन	संतोष बनाम निरंतर इच्छा।

चुनौतियों का समाधान: 'वृत्त' से 'मध्यम मार्ग' की ओर : इन सीमाओं के बावजूद, शोध यह स्पष्ट करता है कि चुनौतियाँ इन सिद्धांतों की विफलता नहीं, बल्कि इनके अनुकूलन (Adaptation) की मांग करती हैं।

- जैसा कि अर्थशास्त्री ई.एफ. शूमाकर ने तर्क दिया है, हमें "असीमित विकास" के स्थान पर "सतत और मानवीय विकास" की ओर बढ़ना होगा (Schumacher 76)।
- अहिंसा को 'कायरता' के बजाय 'सामरिक धैर्य' (Strategic Patience) के रूप में पुनर्गठित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध का ऐतिहासिक और दार्शनिक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि **अहिंसा** और **अपरिग्रह** केवल प्राचीन काल के धार्मिक सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि वे 21वीं सदी के अस्तित्वगत संकटों के लिए सबसे आधुनिक और वैज्ञानिक समाधान हैं। यह निष्कर्ष निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है:

वैचारिक संश्लेषण :अध्ययन से यह सिद्ध हुआ है कि आधुनिक वैश्विक संकटों—चाहे वह यूक्रेन और मध्य-पूर्व के युद्ध हों या विनाशकारी जलवायु परिवर्तन—की जड़ मानवीय **'अहंकार'** और **'असीमित संग्रह'** में है। जैन दर्शन का 'अनेकांतवाद' हमें वैचारिक कट्टरता से मुक्त कर कूटनीतिक संवाद का मार्ग दिखाता है, जबकि बौद्ध दर्शन की 'करुणा' और 'मध्यम मार्ग' हमें विनाशकारी उपभोक्तावाद से बचाकर एक संतुलित जीवन पद्धति की ओर ले जाते हैं।

ऐतिहासिक प्रामाणिकता :इतिहास इस बात का साक्षी है कि सम्राट अशोक की 'धम्म-विजय' से लेकर महात्मा गांधी के 'सत्याग्रह' तक, जब भी अहिंसा को शक्ति के रूप में अपनाया गया, समाज में स्थायी शांति स्थापित हुई। यह शोध इस भ्रांति का खंडन करता है कि अहिंसा कायरता है; इसके विपरीत, यह एक 'नैतिक साहस' (Moral Courage) है जो परमाणु हथियारों से भी अधिक शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है।

भविष्य की राह :वर्तमान 'सतत विकास लक्ष्यों' (SDGs) की प्राप्ति तब तक संभव नहीं है जब तक कि व्यक्तिगत स्तर पर 'अपरिग्रह' (संसाधनों का सीमित उपयोग) और वैश्विक स्तर पर 'अहिंसा' (सह-अस्तित्व) को आत्मसात न किया जाए। हमें 'अधिक से अधिक संचय' के आर्थिक मॉडल को बदलकर 'साझा भविष्य' के मॉडल पर काम करना होगा।

अंततः, यह शोध प्रतिपादित करता है कि बुद्ध और महावीर का दर्शन कालतीत (Timeless) है। आज विश्व के पास दो ही विकल्प हैं: या तो वह 'हिंसा और परिग्रह' के मार्ग पर चलकर आत्मविनाश की ओर बढ़े, या फिर 'अहिंसा और अपरिग्रह' को अपनाकर एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था का निर्माण करे। जैसा कि प्रसिद्ध उक्ति है— *"संसार में प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है, किंतु किसी एक के लालच के लिए नहीं।"*

संदर्भ ग्रंथ सूची :

प्राथमिक स्त्रोत (Primary Sources) :

1. **आचारांग सूत्र.** *श्रमण सूत्र: जैन आगम साहित्य.* संपादक: मुनि नथमल, जैन विश्व भारती, 1998, पृ. 45-112.
2. **उमास्वामी, आचार्य.** *तत्त्वार्थ सूत्र: दैट व्हिच इज (Tattvārtha Sūtra: That Which Is).* अनुवादक: नथमल टाटिया, हार्पर कॉलिन्स (HarperCollins), 1994, पृ. 165-189.
3. **बुद्ध.** *धम्मपद: द सेइंग्स ऑफ द बुद्धा (The Dhammapada).* अनुवादक: थॉमस बायरोम, शांभला पब्लिकेशंस (Shambhala Publications), 1993, पृ. 5-28, 120-135.
4. **श्रीलंकाई परंपरा.** *मज्झिम निकाय (Majjhima Nikaya).* अनुवादक: भिक्खु बोधि, विजडम पब्लिकेशंस, 1995, पृ. 210-245.

द्वितीयक स्त्रोत (Secondary Sources - Books & Journals) :

5. **अल्टेकर, ए. एस.** *प्राचीन भारतीय शासन पद्धति.* भारती भंडार, 1948, पृ. 88-104.
6. **गांधी, महात्मा.** *सत्य के प्रयोग (An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth).* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, 1927, पृ. 234-256.
7. **जैन, सागरमल.** *जैन दर्शन और समकालीन समस्याएँ.* भारतीय ज्ञानपीठ, 2001, पृ. 56-82.
8. **थापर, रोमिला.** *अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन (Asoka and the Decline of the Mauryas).* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997, पृ. 124-150.
9. **शूमाकर, ई. एफ.** *स्मॉल इज ब्यूटीफुल: इकोनॉमिक्स एज़ इफ पीपल मैटर्ड (Small Is Beautiful).* हार्पर पेरेनियल, 2010, पृ. 54-76.
10. **सिंगर, पीटर.** *प्रैक्टिकल एथिक्स (Practical Ethics).* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011, पृ. 82-110.
11. **सिवासाक, सुलाक.** *द विजडम ऑफ सस्टेनेबिलिटी: बुद्धिस्ट इकोनॉमिक्स (The Wisdom of Sustainability).* कोआ बुक्स, 2009, पृ. 34-58.
12. **सेन, अमर्त्य.** *द आर्गुमेंटेटिव इंडियन (The Argumentative Indian).* फरार, स्ट्रॉस और गिरौक्स, 2005, पृ. 161-180.

रिपोर्ट्स और डिजिटल स्त्रोत (Reports & Digital Sources) :

13. **संयुक्त राष्ट्र (United Nations).** *ट्रांसफॉर्मिंग आवर वर्ल्ड: द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट.* यूएन पब्लिशिंग, 2015, पृ. 12-25. www.un.org/sustainabledevelopment/
14. **विश्व शांति सूचकांक (Global Peace Index).** *इंस्टिट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस (IEP) रिपोर्ट 2024.* पृ. 45-60.
15. **IPCC.** *क्लाइमेट चेंज 2023: सिंथेसिस रिपोर्ट.* इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज, 2023, पृ. 18-30.

•